धुर द पैगाम
एक औंकार सतिगुरु प्रसादि
आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ।।
हक
हक
मेरे साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
माटी की पुतरा कैसे नचत है । देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरत है ।
जब कछु पावै तब गरबु करत है । माइआ गई तब रोवन लगत है ।
कह रविदास बाजी जग भाई । बाजीगर सउ मोहि प्रीत बन आई ।
Www.9009.co.in

"माटी का पुतला"

1. माटी को पुतरा कैसे नचत है । देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरत है ।

अर्थः- (मनुष्य) मिट्टी का पुतला ही तो है, फिर भी आश्चर्यजनक तरीक़े से नाचता (चलता-फिरता, करता) है । देखता है, सुनता है, बोलता है और (इधर-उधर) दौड़ा फिरता है ।

जब कछु पावै तब गरब करत है । माइआ गई तब रोवन लगत है ।

अर्थ:- जब कोई उपलब्धि होती है तो अभिमान करने लगता है, धनादि की हानि हो तो दु:ख-संताप में रोता है ।

मन बच क्रम रस कसह लुभाना । बिनस गइआ जाइ कहूं समाना ।

अर्थ:- मन, वचन, कर्मों से सांसारिक सुखों में संलग्न रहता है और मरणोपरांत इधर - उधर जन्म लेकर आवागमन के चक्र में रत रहता है ।

कह रविदास बाजी जग भाई । बाजीगर सउ मुोहि प्रीत बन आई।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 487)

अर्थ:- रविदास जी कहते हैं कि यह संसार एक खेल है और मेरी प्रीति (उस खेल के) खिलाड़ी (परमात्मा) के साथ अडोल जुड़ी है ।

a. जग सुपना बाजी बनी - खिन मह खेल खेलाइ । संजोगी मिल एकसे - विजोगी उठ जाइ । जो तिस भाणा सो थीऐ - अवर न करणा जाइ । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 18)

अर्थ:- संसार स्वप्नवत् अस्थिर है, यह बाजीगर का खेल है जो पल-भर में समाप्त हो जाता है । संयोग की नियति वाले परमात्मा में लीन हो जाते हैं, वियोग की नियति वाले ठोकरें खाते रह जाते हैं । सच तो यह है कि जो उसे मंजूर हो, वही होता है; कुछ और नहीं होता, न ही किया जा सकता है ।

७. पपै पातिसाहु परमेसरु - वेखण कउ परपंचु कीआ । देखै बूझै सभु किछु जाणै - अंतरि बाहरि रवि रहिआ ।

अर्थः- परमेश्वर तमाम विश्व का बादशाह है । उसने आप यह संसार बनाया है कि जीव इसमें उसका दर्शन करें । सृजन हार प्रभु हरेक जीव की सँभाल करता है, प्रत्येक के मन की बात समझता है, वह सारे संसार में सर्वत्र व्यापक है ।

बबै बाजी खेलण लागा - चउपड़ि कीते चारि जुगा । जीअ जंत सभ सारी कीते - पासा ढालणि आपि लगा । (433)

अर्थः- हे मन ! परमात्मा आप (चौसर की) खेल, खेल रहा है । चार युगों को उसने (चौसर के) चार पल्ले बनाया है, सारे जीव-जन्तुओं की गोटियाँ बनाई हैं, प्रभु आप पाँसे फेकता है (कुछ गोटियाँ पार उतर जाती हैं और कुछ बीच में पड़ी रहती हैं) ।

८. काठ की पुतरी कहा करै - बपुरी खिलावनहारो जानै । जैसा भेखु करावै बाजीगरु - ओहु तैसो ही साजु आनै । (206)

अर्थः- यह जीव बेचारा काठ की पुतली है, इसे खिलाने वाला प्रभु ही जानता है कि इसे कैसे नचा रहा है ? (प्रभु) बाजीगर, जैसा स्वाँग रचाता है, वह जीव वैसा ही स्वाँग रचता है ।

९. मउला खेल करे सभि आपे । इकि कढे इकि लहरि विआपे । जिउ नचाए तिउ-तिउ नचणा - सिरि-सिरि किरत विहाणीआ ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1020)

अर्थः- परमात्मा सब खेल स्वयं रचाता है । कुछ (जीवों) को मुक्ति देता है और कुछ माया के प्रवाह में बहते चले जाते हैं । जैसा वह नचाता है (अर्थात् जैसा करने की प्रेरणा देता है), जीव वैसा ही नाचता है, प्रत्येक जीव के सिर पर उसका कर्मफल लिखा है ।

e. सोई मउला जिन जग मउलिआ - हरिआ कीआ संसारो ।
आब खाक जिन बंध रहाई - धंन सिरजणहारो । (24)

अर्थः- वही सबका स्वामी है, जिसने जगत को प्रफुल्लित किया एवं संसार को हरा-भरा कर दिया । (रचना करते हुए) जिसने पानी, मिट्टी आदि तत्त्वों को एकत्रित किया है, वह स्रष्टा धन्य है ।

f. सरब भूत आप वरतारा । सरब नैन आप पेखनहारा ।

अर्थः- सारे जीवों में प्रभु आप ही सर्वव्यापक है, (उन जीवों की) तमाम आंखों से प्रभु आप ही देख रहा है ।

सगल समग्री जा का तना । आपन जस आप ही सुना ।

अर्थः- (जगत् के) सारे पदार्थ जिस प्रभु का शरीर हैं, (सर्वत्र व्यापक होकर) वह अपनी शोभा आप ही सुन रहा है ।

आवन जान इक खेल बनाइआ । आगिआकारी कीनी माइआ।

अर्थः- (जीवों का) जन्म-मरण प्रभु ने एक खेल बनाया है और अपने हुक्म-अनुसार चलनेवाली माया बना दी है ।

सभ कै मध अलिपतो रहै । जो किछ कहणा सु आपे कहै ।
आगिआ आवै आगिआ जाइ । नानक जा भावै ता लए समाइ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 294)

अर्थः- हे नानक! (जीव) अकालपुरुष के हुक्म-अनुसार जन्मता है और हुक्म-अनुसार मरता है, जब उसकी रज़ा होती है तो उन्हें अपने में लीन कर लेता है ।

2. कूड़ राजा - कूड़ परजा - कूड़ सभ संसार । कूड़ मंडप - कूड़ माड़ी - कूड़ बैसणहार ।

अर्थः- (इस श्लोक में गुरु जी बताना चाहते हैं कि प्रभु के बिना शेष सब मिथ्या है)। राज्य प्राप्त करके राजा बन जाना, प्रजा-पालक होना या संसार का स्वामी होना, सब हे प्रभु, तुम्हारे बिना मिथ्या है । भव्य भवन, उद्यान और उनमें उठने- बैठने वाले, सब मिथ्या हैं ।

कूड़ सुइना - कूड़ रुपा - कूड़ पैन्हणहार । कूड़ काइआ - कूड़ कपड़ - कूड़ रूप अपार ।

अर्थः- सोना-चाँदी और इसे पहनने वाले सब असार हैं । यह शरीर मिथ्या है, सुन्दर वस्त्र और अपार सौंदर्य सब व्यर्थ है ।

कूड़ मीआ - कूड़ बीबी - खप होए खार । कूड़ कूड़ै नेह लगा - विसरिआ करतार ।

अर्थः- पति या पत्नी होना भी मिथ्या है, वे विषय-विकारों में जूझते रहते है । मिथ्या का मिथ्या से लगाव है, परमात्मा को सबने विस्मृत कर दिया है ।

किस नाल कीचै दोसती - सभ जग चलणहार । कूड़ मिठा - कूड़ माखिउ - कूड़ डोबे पूर ।

अर्थः- सारा संसार नश्वर है, यहाँ किसकी मित्रता स्थायी हो सकती है ? मिष्टान्न, मधु और डूबते हुए बेड़े, सब मिथ्या हैं ।

नानक वखाणै बेनती - तुध बाझ कूड़ो कूड़ । (468)

अर्थः- गुरु नानक कहते हैं कि हे हरि, तुम्हारे बग़ैर सब मिथ्या ही मिथ्या है, नश्वर है, माया है ।

3. लख टकिआ के मुंदड़े - लख टकिआ के हार । जित तन पाईअह नानका - से तन होवह छार । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 464)

अर्थः- राजे-रानियाँ (उसका यश) गाते हैं और स्तुति रूप कितना उलट-पुलट बोलते हैं । उन्होंने लाखों रुपये की कर्ण फूल और मालाएँ पहनी होती हैं, किन्तु (नानक कहते हैं) जिस शरीर पर उन्होंने वे आभूषण पहने होते हैं, उसे राख हो जाना है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

Main Teachings and Important Points -

Guru sahib uses vivid metaphors to teach that the world is transient and illusory without God. Humanity is likened to a clay puppet dancing at God's command, and all worldly achievements and attachments are ultimately unreal (mithyā)

without the Creator. The Guru's word (Shabad) repeatedly emphasizes that the God alone is the true doer and sustainer, without him, everything is empty. He emphasizes upon the emptiness of worldly pomp, the divine "game" of creation, and the need to fixate one's mind on God.

Humankind as a "clay puppet." The verse opens with the striking image of "How is this clay puppet dancing?" (i.e., human life is like a puppet animated in a wondrous way)

❖ Guru sahib explains that though man is merely a lump of clay, under the influence of Maya (illusion) he behaves as if independently mobile and acting. He sees, hears, speaks and runs about – but all by God's will.

❖ When the puppet earns anything, he swells with pride; when the wealth is lost, he cries out in grief.

❖ The shabad drives home the futility of ego: the mind, speech and actions are captivated by sensory pleasures, and after death the soul merely wanders again in the cycle of births and deaths.

❖ It concludes that only an unshakable love for God (the "True Player" of this world) frees one from that cycle. "This world is a mere game, friend; my soul's love is joined inseparably with the Player (God)".

The world as a Divine "game." Similarly, the Guru Granth Sahib repeatedly likens life to a board-game controlled by God. One hymn says, "The world is like a dream, created as a game played by the Lord..."

❖ Beings gather and disperse according to God's will – those destined for union with Him unite, and those doomed to part asunder disperse (sanjog and vichog).

❖ God is explicitly called the Supreme King (Pātishāh Paramesar) who created and maintains the world so that creatures may perceive Him; He pervades all in and out and knows every heart.

❖ God Himself plays the board-game. He has made the four ages into the board, and all living beings are the pawns, while God Himself casts the dice. The game is played between God and Kaal and on stake is the soul's destiny. The soul through her actions and choices, supports whichever player, such player casts the dice and seals the soul's fate.

❖ In other words, every life's outcome is by Divine Ordinance (hukam).

❖ God is omnipresent Lord and puppeteer as underlined by the verses. A Shabad in Sukhmani (Ang 294) declares: "In all forms (sarab bhūt) God Himself pervades them... In all eyes He Himself is the watcher... All matter is His body; He Himself enjoys His own glory.

❖ In this "Divine wonder," births and deaths are merely God's play: "He fashioned birth and death into a game, and created Maya (illusion) to run it all." Every creature dances as God makes them to dance, under the influence of their karma ("on each head is the token of their own deeds").

❖ Thus no one acts outside God's command dictated by their karmic actions; all happen exactly according to His will. Another verse explicitly teaches that "God Himself resides everywhere (in every heart and beyond) ... There is no other; only if it pleases Him, does He draw a soul within Himself (to salvation).

Worldly attachments are hollow (mithyā). The Gurū sahib also warns that without God, every worldly thing is false or worthless. The stanza iterates, "False are kings, false their subjects, false the whole world... false are thrones, false the palaces... false is gold, silver, and those who wear them... false are body, clothes, and all beauty." It laments that man and woman themselves are engaged in this falsehood and becoming humiliated by it. In short, God (alone) is not false; everything else is a passing illusion and attaching to it is folly. As guru sahib explains, this whole world is trickery (chhal), like a puppeteer's show. The kings and subjects are all false. Palaces, beauties, even the silvers, the body, fine cloth – all are mere delusions. Furthermore, the creature trapped in this illusion falls in love with falsehood as if it were honey, forgetting the Creator. Only God is real; without Him, everything else is pure falsehood.

Letting go of pride and seeking God's Name. All teachings converge upon the remedy, remembrance of God alone. Titles and honours mean nothing in the end. Guru Sahib criticizes those who deck themselves in finery: "They wear millions worth nose-rings and necklaces, but guru sahib states: the very body on which they are worn will be reduced to ashes." (Even Brahmā and Kṛṣṇa pale before the One Reality.) No collection of scriptures or fasts can substitute true devotion. Only by the Guru's grace and meditating on God's Name can one transcend Maya's snare.

In conclusion, these verses urge us to see the world's impermanence and superficiality; to understand that God alone is the Creator and Controller; and to surrender ego and desires,

fixing our love on God. The Guru Granth Sahib concludes, "Whatever pleases God alone happens; nothing else can be done", and only He frees us from the endless game of birth and death.

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"

ऐक शब्द

साध संगत जी, यदि कुछ भी जरा सा भी कम रह गया अथवा बड़ गया है तो हम दोनों हाथ जोड़कर नतमतसक आपसे क्षमा प्रार्थी हैं । अतः कृपया क्षमा प्रदान करें और बख्शने की भी कृपालता करें - धन्यवाद ।

सृष्टि में सदा ही कोई एक विरला - दुर्लभ - मर्यादित - महाजीव विशेष विद्यमान होता ही है, अतः हम उस महा प्राणी को दोनों हाथ जोड़ नतमतसक सदा ही नमस्कार करते हैं ।

" No help is coming dear ! – so, you better start "

NOW – Help Yourself ?

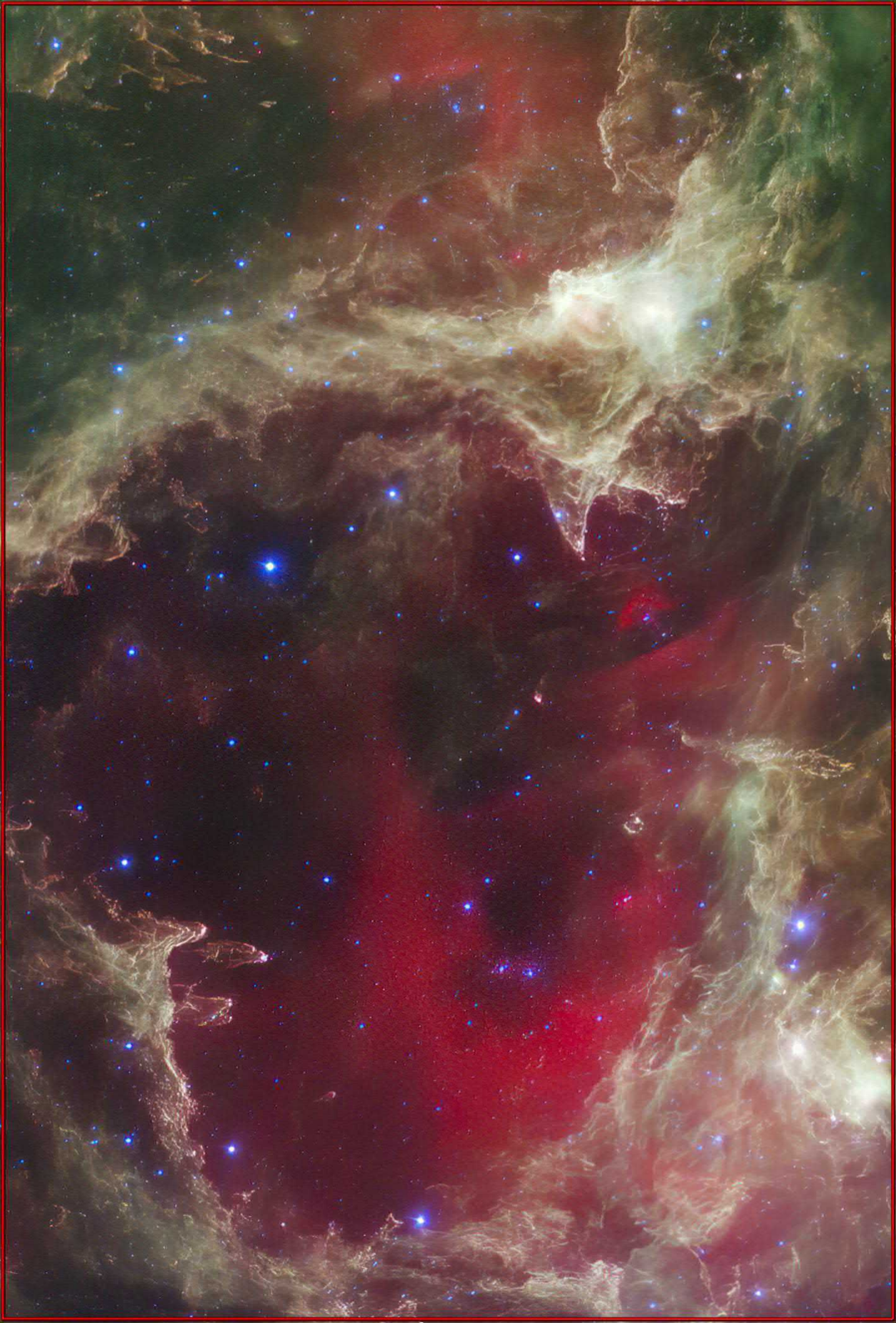

धुर द पैगाम एक ऑंकार सतिगुरू प्रसादि आत्मा द नाउ !
गुरबाणी कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ।।
तपः तपै
हक
नमौ नमः
मेरे साहिब जी
रूहानी
सतसंग
माटी की पुतरा कैसे नचत है । देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरत है ।
जब कछु पावै तब गरबु करत है । माइआ गई तब रोवन लगत है ।
कह रविदास बाजी जग भाई । बाजीगर संउ मोुहि प्रीत बन आई ।
Www.9009.co.in